Saarth
E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

'दौड़ उपन्यासों मैं बजारवाद एव बदलते मूल्य'

डी.बी.चौधरी*

'दौड़' ममता फलिया का सन 2000 में प्रकाशित 95 पुष्ठों में लिखा गया उपन्यास इक्कीसवी सदी के अर्थिक उदारीकरण और बजरवाद के जीवंगत परिणामो का यथार्थ संकलन हैं। 'दौड़' भूमंडलीकरण, व्यावसायिकता, आजीविकतावाद, विज्ञाजनबाजी, उपभोगतावाद आदि के मिश्रण से बने मनुष्यो की कहानी बहुत प्रभावकारी ढंग से प्रस्तुत करता है।

भूमंडलीकरण और उम्र ओधोगिक समाज ने इक्कीसवीं सदी में युवा वर्ग के सामने एकदम नए ढंग के रोजगार और नौकरी के रास्ते खोल दिये हैं। एक समय था जब हर विध्यार्थी का एक ही सपना था पढ़-लिखकर प्रशासनिक सोवा में चुना जाना। तब बाज़ार इतना आकर्षक, विशाल, और व्यापक नहीं था की युवा वर्ग इसे अपने सपनों मैं शामील करे। तब बाज़ार का मतलब था एक ऐसी जगह जहा हम अपने जरुरते पूरी करते थे। उस वक्त का बाज़ार इतना चमकदार और चटकीला नहीं था की आप वह अपनी पूरी जेब खाली कर आते।

आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय बाजारको शक्तिशाली बनाया। इसने व्यापार प्रबन्धन की शिक्षा के द्वार खोले और वर्ग को व्यापार प्रबन्धन में विशेषता हासिल करने के अफसर प्रदान किए। युवा वर्ग ने पूरी लगन से इस सिमसिम द्वार को खोला और इसमे प्रविष्ट हो गया। वर्तमान सदी में समस्त अन्य वाद के साथ एक नया वाद आरंभ हो गया, बाज़ारवाद। जिन युवा-प्रतिभाओ ने यह कमान संभाली उन्होने कार्यक्षेत्र मै तो खूब कामयाबी पाई पर मानवीय संबंधो के समीकरण उनसे काही ज्यादा खींच गए तो काही ढीले पद गये। दौड़ इन प्रभावो और तनाओ की कहानी हैं।

दौड़ उपन्यास का नायक पवन और सायन इक्कीसवीं सदी में भूमण्डीकरण और उत्तर ओधोगिक समाज में नए ढंग की नौकरी करने वाले युवा वर्ग के प्रतीक हैं।

---

*डी.बी.चौधरी, श्री एस एस पी आर्ट्स कॉलेज सिमलिया

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

इन के मटा-पिता भी भारतीय समाज में नए ढंग की नौकरी करने वाले युवा वर्ग के प्रतीक हैं। इन के माता-पिता भी भारतीय समाज में कोई पुरातन पंथी और रूढ़िवादी चरित्र नहीं हैं। वह देहाती भी नहीं हैं। वह किसी जमाने मैं पूर्व को ऑक्सफोर्ड समजे जाने वाले इलाहाबाद सहर में रहते हैं। लेकिन इक्कीसवी सदी के दौर मैं इलाहाबाद पुराना पद चुका हैं। युवा समीक्षक कृष्ण मोहन लिखते हैं-

" बिसवी सदी के अंत मैं भारतीय समाज के सबसे गहरे संस्कृतिक संकट का आख्यान हैं दौड़।"

'दौड़' ममता कालिया पृ.7

इस उपन्यास मैं पवन और सायन उपन्यास के केंद्र और बहुराष्ट्रीय कंपनियो से जुड़े भाटिया चरित्र हैं। उसका जीवन जब व्यावसायिक और आजी विकतावाद के दौर मे अत्यंत कठिन हो गया, संवेदन शून्य और मूल्यहीन हो ज्ञ उस दौर के चरित्र और हिन्दी कथा साहित्य मैं ये नए चरित्र हैं। संस्कारबाथ पिता राकेश के आदर्शो को अपनाकर एम.बी.ए. की शिक्षा प्राप्त कर लेने वाला बड़ा बेटा पवन अपनी उच्च शिक्षित योग्यता से संचालित होकर अहमदाबाद मैं एल.पी.जी गॅस कंपनी के मार्केटिंग विभाग मैं नौकरी प्राप्त कर लेता हैं। उसने सोचा की अगर साल बीतते बीतते उसे पद और वेतन मैं उच्चतर ग्रेड न दिया गया ते वह कंपनी छोड़ देगा। वह एक लेखिका माँ और पत्रकार पिता को बेटा था। इलाहाबाद के बाद अहमदाबाद और बाद मैं राजकोट में वह नौकरी करता था। पवन अहमदाबाद में घर से अठारह सौ किलोमीटर दूर नौकरी करता हैं। पवन अहमदाबाद में घर से अठारह सौ किलोमीटर दूर नौकरी के लिए जाने की बात घर मैं बताता हैं तब माँ-पिताजी नाराज़ हो जाते हैं। वह चाहते थे की वह वही उनके पास रह कर नौकरी करे पर उसने कहा यहा मेरे लायक सर्विस कहा? यह तो बेरोजगार का शहर हैं। ज्यादा से ज्यादा नूरानि तेल की मार्केटिंग मिल जाएगी। माँ-बाप समझ जाते हे की उनका गगन चुम्बी बेटा कहीं और बसेगा। वे लोग अपने बेटे को अपने पास रखना नहीं चाहते लेकिन बच्चे नजदीक न रहे तो कम से कम घर से जुड़े रहेंगे। यह विचार यथार्थवादी हैं लेकिन पवन के माथे पर आधुनिक होने का खून सवार हैं। वह पापा से कहता हे की

"में ऐसे सहर में रहना चाहता हु जहा कल्चर हो न हो, केन्ज़ुमर कल्चर जरूर हो। मौजे संस्कृति नहीं उपभोगता संस्कृति चाहिए तभी में कामयाब रहूँगा।'

'दौड़' पृ.41

Saarth E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

पवन के यह विचार आधेनिक कल युवा वर्ग के विचारो से मिलते-जुलते दिखाई देते हैं। उनके इन्ही विचारो सुनकर मटा-पिता का बड़ा धक्का लगता है। पवन के पिता राकेश पांडे अपनी पत्नी से कहते हैं की इसनि तो घर के संस्कारो को एकदम त्याग दिया तब रेखा कहती हैं पहले तुम्हें भय था की बच्चे काही तुम जैसे आदर्शवादी न बन जाए इस लिए उसे एमबी.ए कराया। अब यथार्थवादी बन गया हैं तो तुम्हें तकलीफ होती हैं। आधुनिक काल के युग मैं जहा भूमंडलीकरण का दौर चल रहा हैं वही आदर्श खोखले जन पड़ते हैं। एक जमाना था जब मनुष्य आदर्श और असुलो के लिए जन कुर्बान कर सकता था। लेकिन आज आदमी धन के पीछे भाग रहा हैं। वह मशीन की तरह जडवादी बन गया हैं।

पवन उत्पादन, विपणन और विक्रय की नीतियो को दिन-रात अनुभव करके अपने नाम के समान ही उपभोक्ता संस्कृति के विधायक तत्वो को अपने संसकरवाद एव वेयक्तिक जीवन में स्थान देता हैं। अहमदाबाद, दिल्ली, राजकोट, जैसे कार्यक्षेत्र मैं कार्य करने वाले उपभोगता संस्कृति के प्रतिनिधि, सहयोगी मित्र उसके जीवनको आधुनिक दर्शन की दिशा मे मोड देने का उपरोक्ष कार्य कर देते हैं। राजविंदर, शिल्पा, राजू, सरद, अभिषेक, और अनुपम जैसे मित्रो के साथ साथ पवन को भी अपनी कंपनी की कर्मभूमि ने इस युग का अभिमन्यु बना दिया। यह जब इस बार घर जाता हैं तो वह साधन को भी कहता है की तुम इस बार मेरे साथ राजकोट चलो तबमाँ कहती हैं-

"इसको भी ले जाओगे तो हम दोनों बिलकुल अकेले रह जाएंगे। वैसे ही यह सीनियर सिटीजन कॉलोनी बनती जा रही हैं। सबके बच्चे पढ़ लिखकर बाहर चले जा रहे हैं। हर घर में समजो एक बूढ़ा, एक बुढी, एक कुत्ता और एक कार बस यह रह गया हैं।"

'दौड़' पृ. 40

बचपन मैं गंगाजल पीकर बड़ा होने वाला पवन अब गंगा के पानी को घातक समाज रहा हे। वह हैं पापा यह वह शहर नहीं जिसे माइयों छोड़ कर गया था। उसके पापा कहते हैं शहर और घर रहने से बस्ते हैं बेटा। अब तो तुमने एक अंजान जगह का अपना ठिकाना बना कियाव हैं और-

"केवल अर्थशास्त्र से जीवन नहीं कटता पवन उसमे थोड़ा दर्शन और आहयात्मक और ढेर सी संवेदना भी पनपनी चाहिए।"

'दौड' पृ। 45

तब वह पवन अपने पापा से कहता हैं-

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

"आपको पता नहीं दुनिया कितनी तेज़ी से आगे बढ़ रही हैं। अब धर्म दर्शन और आहयात्मक जीवन मैं हर समय रिसने वाले फोड़े नहीं हैं।"

'दौड' पृ. 45

केवाले यही नहीं, एक समय मैं अपने माता-पिता की सामान्य आशाओ का पालन करने वाला पवन उनको कोई पूर्व सूचना दिये बगेर अपनी विवाह की तिथि तय कर लेता हैं। ओधोगिक परिवेश में अपनी तरक्की को अनिशय महत्त देने वाला पवन अपने जीवन दर्शन को अधिक सशक्त बनाने के प्रयश मैं जूता हुआ हैं। मात‍ापिता की आकांषाओ को रोंद कर 'स्टेला' जैसी अत्याधुनिक लड़की से विवाह कर अपने सांसरिक जीवन को भी व्यावसायिक नीतियो का रूप दे देता हैं। पांडे परिवार पवन की शादी की खबर सुनकर हनप्रभ रह गया। उन्होने न लड़की देखि थी न उसका घर बार। पवन की माँ रेखा सच्चे हल को जानने के लिए राजकोट जाने के लिए निकली। वह वह पाहुची तो पवन स्टेला को परिचय कराते हुए कहा की माँ स्टेला मेरी बिज़नेस पार्टनर, लाइफ पार्टनर, रूम पार्टनर तीनों हैं। माँ ने कहा 'पुन्नु' यह सिलबिल सी लड़की तुजे कहा मिल गयी। पवन कहता हैं माँ इंका लाखो का कारोबार हैं। यही बात तुम्हारे बारे मैं दादी माँ ने पापा से कही थि। माँ को बहुत दुख होता हैं। फिर पवन के घर भरत आता हैं रसोई बनाते पूछता हैं कितनी रोटी खाओगी। माँ दुखी होती हैं की अब बेटे के घर मैं उसकी रोटी की गिनती होती हैं। बेटियाँ परायी हो जाती हैं यह तो देखा था पर बेटे पराए हो जाए माँ दु:खी होती हैं। पवाण एनई माँ को कहा की अगले महीने आप चोबिस को मद्रास पहुचो स्वामी कजकी की सालगिरह पर चौबीस जुलाई को वह बहुत बड़ा जलसा होता हैं। वही हमारी शादी होगी। रेखा वापस अलहाबाद जाने के पश्चयात राकेश को सब कुछ विस्तार से बता रही हैं तब वह कहते हैं की अपनी गरिमा इसी मैं होती की बच्चो मैं टकराव की स्थिति न आने दे। समूहिक विवाह के बाद वे पवन और बहू को लेकर घर आए। दो दिन सलवार सूट पहनने के बाद स्टेला ने कहा 'मैं दुपट्टा नहीं संभाल सकती' वह वापस अपनी प्रिय पोशाक जीन्स और टॉप में नजर आई। किसी जमाने मैं अपनी सास की मर्ज़ी के खिलाफ विवाह करने वाली माँ रेखा पवन की पसंद स्टेला पर खान पकाने जैसा 'स्त्रियोचित' कम सीखने के लिए दबाव डालती हैं लेकिन जब वह माँ की तमाम रचनाए कम्प्युटर की फ्लॉपी मैं उतार कर उसे देती हैं तो वह चमत्कृत कदम कदम पर टूटती हैं।

पवन के समान ही 'कर्रियरीजम' के दर्शन का समर्थन करनेवाला संगजकीय वियव को बादशाह बनाने की लालसा मैं ताइवान की सॉफ्टवेर कंपनी मैं नियुक्त हो जाता हैं। छोटे बेटे के चले जाने के बाद उसे लगता हैं बच्चे घर के तभूजाल मैं किस तरह समाये होते हैं यह उनकी गैरमौजूद्गी मैं ही पता चलता हैं। कोलोनि में ज़्यादातर ऐसे सफल कामियाब बेटो के

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

माँ बाप रहते हैं। सोनी साहब का बेटा भी एच.सी.एल की और से न्यूयोर्क चला जाता हैं। एक दिन सोनी साहब को दिल का दौरा पद जाता हैं और उसे हॉस्पिटल मैं भर्ती करवाया जाता हैं। शाम तक तो सव वाहिका उसका पार्थिव शरीर और उनकी बेहाल पत्नी को उतार कर चली गई। मिसेज सोनी ने सिद्धार्थ को इंटेरनेशनल फोन लगा कर कहा तेरे डेडी, तभी वह फोन मिन्हाज साहब ने लेकर कहा भाई सिद्धार्थ बड़ा बुरा हुआ। अब तू जल्दी से आकार अपना फर्ज़ पूरा कर। तब सिद्धधार्थ कहता हैं अंकल मैं जितना भी जल्दी करूंगा, मौजे पाहुचने मैं एक हफ्ता तो लग ही जाएगा। आप शब मुर्दा घर मैं रखवा दीजिये। आप मम्मी को फोन दीजिये। वह कहता हैं-

"आप एस कीजिये इस कम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाह संस्कार करवाइए। मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा। आप सब कम पूरे कार्वा लीजिये मजबूरी हैं ममा।"

'दौड़' पृ। 81

सोनी साहब पर आई आकस्मित घटना ने सब के लिए सबक का कम किया। सभी ने अपने वसीयत नामे संभाले और बेंक खाने के ब्योरे। क्या पता कब बुलावा आ जाए। अलमारी में दो-चार हज़ार रुपए जरूरी समजा गया।

'दौड़' आज के उस मनुष्य की कहानी हैं जो बाज़ार के दबाव समूह उसके परोक्ष-अपरोक्ष मारफ़ तनाव, आक्रमण और निमेमता तथा अंधी दौड़ में नष्ट होते मनुष्य के परस्परिक संबंध की परंपर और वर्तमान जटिलताओ ले मध्य विकराल होते उभराल की सूक्ष्म पड़ताल करती हैं। निसंदेह व्यावसायिकता से आजीविका वाद पैदा होता हैं और यह आजीविका वाद पारिवारिक संबंधो को और संबंधों की भावनात्मक, आन्मियता आदि को नष्टप्राय कर देता हैं।